`निराकार परमात्मा के अवतरण की विधि' विषय पर संगोष्ठी

15वें अखिल भारतीय भगवद्गीता सम्मेलन में एक मंच पर बैठकर पीठाधीश्वर तथा गीता पर अपनी अच्छी पकड़ रखने वाले बहुत सारे गीता पाठियों ने 'परमात्मा के अवतरण तथा उसके आने की विधि' विषय पर गूढ़ चर्चा की। सभी ने गीता में वर्णित परमात्मा के रूप तथा अवतरण को लेकर अपने-अपने विचार व्यक्त किये। सभी ने माना कि यह समय परमात्मा के अवतरण का उचित समय हो सकता है। उन द्वारा उवाचित विचार निम्नवत हैं।

इस सम्मेलन के दौरान पैनल डिस्कसन में 'परमात्मा का साकार माध्यम कौन', 'परमात्मा के अवतरण की विधि' और 'गीता में वर्णित युद्ध हिंसक या अहिंसक' विषय पर सभी महानुभावों ने समय की कसौटी व तर्कों पर आधारित विचार को खुले मन से कहा भी और सुना भी...।

इस विषय पर चर्चा करते हुए **स्वामी आध्यात्मानंद जी महाराज,शिवानंद आश्रम, अहमदाबाद** ने कहा कि भारतीय संस्कृति सनातन है। इसके संधिकाल में एक दिव्य शक्ति का एहसास होता है, वो मुहूर्त परमात्मा के अवतरण का माना जा सकता है। यदि हमें परमात्मा के साथ जुड़ना है तो हमें स्वयं को खाली करना होगा।

डॉ. पुष्पा पाण्डेय,गीता स्कॉलर,जबलपुर ने कहा कि आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं, जहाँ पर हर चीज़ का प्रमाण मांगा जाता है। हम परमात्मा को तीसरे नेत्र से ही देखते हैं। गीता के अध्याय 4, 9 व 10 में परमात्मा के अवतार लेने की विधि का कई श्लोकों में वर्णन है। उन्होंने यह भी कहा, कि डार्विन के विकासवाद की बात करते हैं लेकिन आज वह गलत सिद्ध हुआ है और इसी के आधर से लोगों ने शास्त्रों में अवतार की चर्चा की है। परमात्मा, प्रकृति और पुरुष से भिन्न है वह परम-पुरुष। जब हम वाम मार्गी हो जाते हैं

`निराकार परमात्मा के अवतरण की विधि' विषय पर संगोष्ठी में ब्र.कु. बृजमोहन, त्रिनाथ जी, स्वामी सर्वानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मदेव, स्वामी आध्यात्मानंद, ब्र.कु. प्रेम सिंह व ब्र.कु. डॉ. पुष्पा पाण्डेय।

तो उसके उत्तरोत्तर काल में परमात्मा का अवतरण होता है, इसका वर्णन वेदों में भी है।

डॉ. एस.एम. मिश्रा, संस्कृत विभाग प्रमुख, कुरुक्षेत्र विश्व-विद्यालय ने कहा कि श्रद्धा विचार का द्वार खोलती है और परमार्थ से हमारा व्यवहार सिद्ध होता है। भगवान शब्द ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान व वैराग्य का प्रतीक है। परमात्मा सभी प्राणियों का स्वामी है।

इस विषय को हैदराबाद से आये गीता के **महान विद्वान त्रिनाथ जी** ने गीता में वर्णित परमात्मा के अवतरण तथा योग को कई श्लोकों के माध्यम से सबके सामने रखा। उन्होंने आत्मा परमात्मा और प्रकृति विषय को अलग किया तथा सापेक्ष भाव से परमात्मा के अवतरण की बात को श्रोताओं के समक्ष रखा।

`गीता में वर्णित युद्ध हिंसक या अहिंसक' विषय पर संगोष्ठी

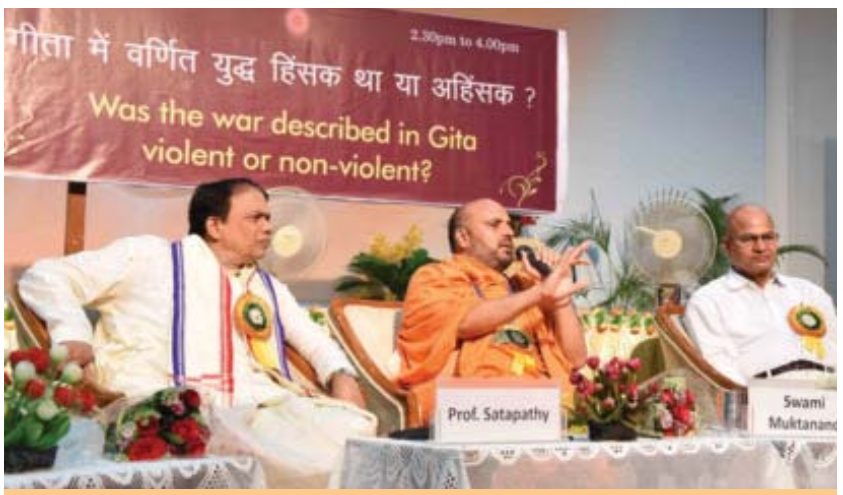

संगोष्ठी के दौरान मंच पर अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी डॉ. मुक्तानंदपुरी। साथ हैं प्रो. सतपथि व जस्टिस वी. ईश्वरैय्या।

सम्मेलन के दूसरे सत्र में `गीता में वर्णित युद्ध हिंसक या अहिंसक' विषय पर संगोष्ठी रखी गई। इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए न्यायमूर्ति वी. ईश्वरैय्या ने कहा कि न्याय पाने के लिए हिंसा अपनाना किसी भी प्रकार से उचित नहीं है। जितनी भी हिंसा सारे देश में हो रही है उसका कारण नैतिक पतन है, हिंसा से हिंसा का जन्म होता है। अगर किसी को परिवर्तन करने के लिए दण्ड दिया भी जाता है तो वह परिवर्तन अल्पकाल के लिए होता है। वास्तव में शांति से शांति की स्थापना होती है। भारत जब स्वर्ग था, देवी-देवताओं का राज्य था उस समय उस राज्य में हिंसा नहीं थी। जितना हम आत्मिक रूप से सशक्त होते हैं उतना ही हिंसा का सहारा नहीं लेना पड़ता। सत्य स्वरूप में स्थित होने से सतयुग की स्थापना हो जाएगी।

इस विषय पर ब्र.कु. प्रेम सिंह ने कहा कि वास्तव में गीता में वर्णित युद्ध कोई हिंसक नहीं था। यह युद्ध हमारे मन के अंदर चलने वाले नकारात्मक व सकारात्मक विचारों का द्वन्द्व है। हिंसा का मूल कारण दैहिक वृत्ति है जिससे पाप कर्म होते हैं। जब हमारी आत्मिक वृत्ति थी तो विश्व अहिंसक था क्योंकि आत्मा उस समय शांति, प्रेम, आनंद से भरपूर थी। सतयुग की स्थापना परमात्मा की शक्ति के आधार से ही संभव है और परमात्मा कभी हिंसा नहीं सिखाता।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए **स्वामी डॉ. मुक्तानंदपुरी,हरकेशपुरी आश्रम,अलवर** ने कहा कि भारतीय संस्कृति के आधार पर महाभारत का युद्ध हुआ, लेकिन हम उसकी आध्यात्मिक व्याख्या कर सकते हैं। देश, काल, परिस्थिति के अनुसार ये सारा विश्व सापेक्ष है। जितना हम करुणा, दया, प्रेम से विजय प्राप्त कर सकते हैं उतना हिंसा से नहीं। जब तक मैं और मेरा रहेगा तब तक हिंसा रहेगी। प्राणी जब स्वधर्म का पालन करेगा तो हिंसा खत्म हो जाएगी।

प्रो. सतपथि,उप-कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,तिरुपति ने कहा कि युद्ध हुआ था या नहीं, यह ऐतिहासिक पक्ष है या दार्शनिक पक्ष! हम इसके आध्यात्मिक पक्ष को देखना चाहेंगे। गीता का वास्तविक ज्ञान मन को केन्द्रित करने के लिए और दूसरा मोह को नष्ट करने के लिए दिया गया। गीता को समझने के लिए तपस्या चाहिए। हमें संजय बनना है, अर्थात् अपनी इंद्रियों को अपने वशीभूत करना है।

श्रीमद्भगवद्गीता एक ही ऐसा सार्वभौमिक ग्रन्थ है जिसमें भगवानुवाच है

इस सम्मेलन के दौरान महानुभावों ने अपने विचार में कहा कि...

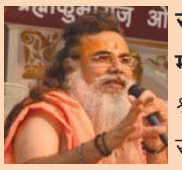

स्वामी धर्मदेव जी महाराज,हरि मंदिर आश्रम ने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता निश्चित रूप से सार्वभौमिक ग्रन्थ है, यह धर्म की सीमाओं से ऊपर है। आज हर व्यक्ति एक-दूसरे को सुझाव देता रहता है कि ये करना चाहिए, ये करना चाहिए, लेकिन उसे खुद पता नहीं है कि मुझे क्या करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत ही एक ऐसा देश है जो सारे विश्व के भले की सोच सकता है।

महाशक्तिपीठ दिल्ली के अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द सरस्वती ने कहा कि वास्तव में अभी ही गीता का युग चल रहा है। ये ब्रह्माकुमारी बहनें ही सच्ची ज्ञान गंगाएं हैं जो प्रजापिता ब्रह्मा से निकली हैं। उन्होंने बताया कि सत्य का बोध करने के लिए अन्न की शुद्धि बहुत आवश्यक है, क्योंकि जैसा अन्न होता है, वैसा ही मन बनता है।

हैदराबाद से आये गीता के महान विद्वान त्रिनाथ जी ने बताया कि लोग कहते हैं कि भगवान ने गीता का ज्ञान द्वापर युग में सुनाया लेकिन द्वापर युग के बाद तो और ही कलियुग आ गया, जबकि परमात्मा तो सत्य धर्म की स्थापना करते हैं तो सतयुग आना चाहिए।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि गीता में परमात्मा ने कहा है कि मैं जो हूँ, जैसा हूँ मुझे कोटों में कोई और कोई में कोई जानता है। परमात्मा ने ये भी बताया कि मैं अविनाशी हूँ, अजन्मा हूँ, अभोक्ता हूँ। जबकि श्रीकृष्ण का तो जन्म भी हुआ और उन्होंने इस देह का भी त्याग किया। इससे यही स्पष्ट होता है कि गीता का ज्ञान ज़रूर निराकार परमात्मा ने दिया, जोकि जन्म-मरण के चक्कर से न्यारे हैं।

ब्र.कु.उषा,वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, माउण्ट आबू ने बताया कि गीता ज्ञान की सभी ने अपने-अपने ढंग से व्याख्या की, लेकिन उसके गूढ़ रहस्य को नहीं समझ पाये। उन्होंने कहा कि सभी धर्मों के लोग परमात्मा को ज्योति अथवा प्रकाश के रूप में मानते हैं और हम भी उसे शिव ज्योति के रूप में मानते हैं। परमात्मा शिव ही ऐसे हैं जिनको परमात्माए नमः कहा जाता है, बाकि तो सबको देवताए नमः कहा जाता है। इसलिए ये विचारणीय विषय है कि गीता से परमात्मा शिव का कहीं न कहीं सम्बन्ध है।

कार्यक्रम में गीता से सम्बन्धित अनेक विषयों पर जाने-माने विद्वानों के द्वारा चर्चा की गई। अनेक खुले सत्रों का आयोजन किया गया। 600 से अधिक संख्या में लोगों ने कार्यक्रम में शिरकत की।

आ.प्र. उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति पी.एस. नारायण ने अपने सम्बोधन में बताया कि श्रीमद्भगवद्गीता वास्तव में किसी धर्म विशेष का ग्रन्थ नहीं है, अपितु जीवन को आध्यात्मिक और दार्शनिक मार्ग दर्शन कराता है। उन्होंने कहा कि मैं पिछले 35 वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में हूँ। मैं जब यहाँ आता हूँ तो मुझे बहुत ही दिव्यता का अनुभव होता है।